www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या तृतीय विश्व युद्ध होकर ही रहेगा

श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या तृतीय विश्वयुद्ध होकर ही रहेगा ?

★★

समग्र मानवता पर इन दिनों ऐसे संकट के बादल छाये हैं जिन्होंने उस सम्भावना को सत्य बना दिया है जिसमें मनीषी वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टीन ने तीसरे युद्ध के आणविक आयुधों से मानवी सभ्यता के पूरी तरह नष्ट होने की भविष्य वाणी की थी। एक द्रष्टा के नाते उन्होंने एक पत्रकार के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि 'प्रगति की यही अदूरदर्शी बेलगाम नीति रही तो निस्सन्देह चौथा युद्ध आदिम मनुष्यों द्वारा लड़ा जायगा क्योंकि सभ्यता-संस्कृति के नष्ट हो जाने पर स्थिति वही उत्पन्न हो जायगी जहाँ से मानव ने उठकर चलना, अपनी गुजर-बसर करना सीखा था।'

युद्ध लिप्सा कितनी घातक हो सकती है, इसकी कल्पना आज के समय में करना कठिन नहीं। आज मानव कम्प्यूटर साइंस की दिशा में इतना आगे बढ़ गया है कि उस आधार पर आगत की जानकारी प्राप्त करना असंभव नहीं। इन दिनों विश्व के मूर्धन्य राजनेताओं के कथन, आयुध संबंधी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्यआँकड़े एक ही निष्कर्ष प्रकाश में लाते हैं कि अब युद्ध मनुष्य के अधिक समीप है। कभी भी कहीं से कोई चिन्गारी फूटने भर की देर है और विश्वयुद्ध छिड़ सकता है।

मारक अस्त्रों की शक्ति और कूटिलरणनीति के निर्माण में संलग्न विश्व के महारथियों का अभी भी यह विश्वास है कि वे जहाँ भी चाहेंगे, आक्रमण करके अभीष्ट अपहरण करने में सफल हो सकेंगे। इसमें वे यह भी नहीं देखते कि इसके साथ ही उनके स्वयं के विनाश की संभावनाएँ भी विद्यमान हैं, कुटिलता की शाखा-प्रशाखाएँ यही ताना-बाना बुन रही हैं कि किस प्रकार प्रतिपक्ष को चकमा देने की कला को तिलिस्मजादू के स्तर तक पहुँचाया जा सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि जापान पर गिराये गए अणु बम की तुलना में अब दस लाख गुने अधिक शक्तिशाली आयुध बनाए जा चुके हैं। इनके परीक्षण से जो वातावरण विषाक्त हुआ है उसने शांत ध्रुवों को भी नहीं छोड़ा। भूगर्भ में विस्फोट, समुद्र में अणु ऊर्जा संचालित पनडुब्बी तथा अंतरिक्षमें छाये सैटेलाइट्स ने किसी भी व्यक्ति को इस प्रभाव से अछूता नहीं छोड़ा है। यह प्रक्रिया अभी दशाब्दियों तक वातावरण में छाई रहेगी और अन्न, जल, सांस, वनस्पति आदि के माध्यम से मनुष्यों एवं प्राणियों के शरीर में प्रवेश करके दुखद परिणाम उत्पन्न करती रहेगी।

इन दिनों शस्त्रों पर हो रहा खर्च मात्र कुछ ही वर्ष में ५०० से बढ़कर ६७५ अरब डालर (५४१० अरब रुपये) प्रतिवर्ष तक जा पहुँचा है। गत बीस वर्षों में यह वृद्धि १७३ गुनी हो गयी है। धनशक्ति का महत्व तो अपने स्थानपर है ही,उपेक्षा उस मूर्धन्य प्रतिभाशक्तिकी भी नहींहोनीचाहिए जो जनशक्ति के व्यापक विध्वंस की योजना बनाने हेतु इस कार्य में लगी है। अंतर्राष्ट्रीय मिलिट्री स्ट्रेटेजी अनुसंधान संस्थान लन्दन के अनुसार लगभग पच्चीस हजार प्रतिभाएँ और उनके लाखों सहायक इस कार्य में लगे हैं जिन्हें बौद्धिक क्षमता की दृष्टि से—वैज्ञानिक जानकारी के नाते सर्वोच्च स्तर की कहा जा सकता है। यदि ये ही विभूतियां सृजन प्रयोजनों में लगी होती तो संभवत: विश्व का कायाकल्प कर डालतीं।

इस सदी में तृतीय विश्वयुद्ध की संभावना की चर्चा के पूर्व यदि विगत का ही अवलोकन करें तो पाते हैं कि १९१० से अब तक लगभग १९८ बड़े स्तर के युद्ध हो चुके हैं एवं २६ करोड़ ३५ लाख व्यक्ति युद्ध विभीषिका से कालकवलित हुए हैं। प्रति व्यक्ति मारने का खर्च प्रथम विश्व युद्ध की लागत ६८ हजार रुपये से बढ़कर १५ करोड़ ५० लाख रुपये जा पहुँचा है। इतने पर भी युद्धोन्माद शान्त नहीं हुआ है। अभी भी युवा पीढ़ी में प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध की फिल्में-कथानाक उतने ही लोकप्रिय हैं। इन्हीं की सर्वाधिक मांग भी है। साहस हेतु मोर्चे पर लड़ने का शिक्षण जीवन समर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी जरूरी है परंतु यह जब विकृत मनःस्थिति के रूप में पनपने लगता है तो इसे सामूहिक आत्महत्या की तैयारी ही कहा जायगा ।

'वर्ल्ड वार थ्री' नामक पुस्तक के लेखक श्री शेल्फोर्ड बिडवेल स्वयं भी दोनों विश्वयुद्धों में आर्टिलरी कमाण्डर की हैसियत से काम कर चुके हैं। इसके बाद वे आयुध विज्ञान की एक पत्रिका के सम्पादक रहे । चिन्तक स्तर के इस व्यक्ति ने अपनी पुस्तक में यह मंतव्य व्यक्त किया है कि परिस्थितियाँ ऐसी बन चुकी हैं कि तृतीय युद्ध १९८० व १९९० के मध्य निश्चित ही होकर रहेगा । परन्तु यह धीरे–धीरे विकसित होने वाले वियतनाम जैसे युद्ध के रूप में नहीं विस्फोटक रूप में उभरेगा । एक महाशक्ति के उकसाने पर अणु-आयुधों द्वारा यह युद्ध धरती समुद्र व वायु तीनों जगह लड़ा जायगा। मुख्य रणक्षेत्र पश्चिम जर्मनी होगा क्योंकि वहाँ कम्युनिस्ट व अमेरिका परस्त राष्ट्रों की सेना के सत्तर प्रतिशत से अधिक घातक प्रक्षेपास्त्र केवल इसी आदेश की प्रतीक्षा में बैठे है कि कब वे अपने 'टारगेट' पर टूट पड़ें । यह छद्मलीला कितनी भयावह होगी, इसकी उन्होंने आधुनिक मिलिट्री स्ट्रेटेजी के कम्प्यूटराइज्ड आंकड़ों के आधार पर एक संतुलित रूपरेखा प्रस्तुत की है । उनके अनुसार यह युद्ध १९८५ से अधिक समय तक टाला नहीं जा सकता अनेकों समाचार पत्रों ने उनकी समीक्षा से सहमति व्यक्त करते हुए इसे एक भयावह कयानक लेकिन एक सुनिश्चित संभावना बताया है । उन्होंने लिखा है कि यह युद्ध सैनिकों के मध्य नहीं, अपितु अन्तरिक्षीय उपग्रहों व जमीन से छोड़ी जाने वाली मिसाइलों तथा यंत्र चालित संयंत्रों के मध्य होगा । फिर भी क्षतिग्रस्त तो सारी मानव जाति एवं सभ्यता ही होगी । उप-ग्रहों से छोड़ी गई उच्च ऊर्जा मृत्युकिरणें व्यक्तिको जिन्दा भून देंगी व सम्पत्ति नष्ट कर देंगी । जितने ऐसे सुसज्जित उपग्रह अभी महाशक्तियों के पास हैं उनसे ऐसा लगता है कि पांच अरब व्यक्तियों को मारना कोई कठिन काम नहीं ।

एक वैज्ञानिक भविष्यवाणी स्टाकहोम के इंटरनेशनल पीस रिसर्च

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इंस्टीट्यूट के निदेशक फ्रैंक बार्नेबी ने की है जो स्वीडन की विज्ञान अकादमी की पत्रिका 'ऐमेबियो' में 'दृश्य विज्ञान' शोधमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई है। श्री बार्नेबी के अनुसार 'समस्त शान्ति प्रस्तावों के बावजूद विश्व की परमसत्ताएँ १५ जून १९८५ तक अपने आयुधों के परिसीमन प्रस्ताव पर असहमत ही बनी रहेंगी। परिस्थितियाँ जिस दिशा में अग्रसर हो रही हैं उसे देखते हुए लगता है कि अणु युद्ध उसके बाद टाला नहीं जा सकता ११ बजे प्रातः अमेरिका और उसी समय (शाम को ६ बजे) रूस से आक्रमणप्रत्याक्रमणों का सिलसिला चल पड़ेगा। शुरुआत कौन करेगा कहा नहीं जा सकता लेकिन यह सुनिश्चित है कि अपनी रक्षा में आक्रमण का जवाब देने वाला सारी शक्ति लगा देगा। यह युद्ध कुल मिलाकर २४ घण्टे ही चलेगा इसमें चौदह हजार सात सौ अणु प्रक्षेपास्त्र प्रयुक्त होंगे। ७५ करोड़ व्यक्ति तुरंत मर जायेंगे और ३५ करोड़ गंभीर रूप से घायल होंगे। इस महायुद्ध की लपेट में यूरोप के ऐसे १४५ नगर आयेंगे जिनकी आबादी २ लाख से ऊपर है। पूरे युद्ध में ४१४० मेगाटन अणु ऊष्मा प्रयुक्त होगी जो सुदूर महाद्वीपों को वायुमण्डल में छाये विकिरण प्रभाव से अपनी जकड़ में ले लेगी। विश्व के लगभग ८० प्रतिशत व्यक्ति इस युद्ध के कारण रोग ग्रस्त हो शीघ्र मर जायेंगे या अणु ऊर्जा के शरीर पर दूरगामी प्रभावों के कारण कैंसर व अन्य महामारियों से हुई दुर्गति के फलस्वरूप जब तक जियेंगे कष्ट भरा जीवन जियेंगे।'

श्री बार्नेबी ने यह भविष्यवाणी आयुधों की संख्या परिस्थितियाँ, महा शक्तियों के पारस्परिक तनावजन्य वक्तव्यों को कम्प्यूटर में फीडकर पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर की हैं। वे कहते है कि यह सम्भावित युद्ध जो प्रभाव आयनोस्फियर में छोड़ेगा उसके फलस्वरूप सूर्य महीनों तक धुएँ के काले घने बादलों मे ढका रहेगा। पर्यावरण पर रेडियोधर्मिता के दुष्प्रभाव से आबादी ही नहीं—वन क्षेत्रों तथा जीवजगत का भी सफाया हो जायगा। भूमि कृषियोग्य न रहेगी। जो भी व्यक्ति उपलब्ध खाद्यान्न को खाएगा वह विकिरण के प्रभाव से ग्रस्त हो तुरंत काल को प्राप्त होगा' प्रस्तुत संभावना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नयी नहीं है । अमेरिका के हारवर्ड मेडिकल स्कूल के विकिरण विशेषज्ञ डॉ० हरबर्ट अब्राम्स ने प्रसिद्ध पत्रिका" न्यू इग्लैण्ड जरनल आंफ मेडिसिन,, में प्रकाशित अपने एक लेख को अमेरिकी सरकार की ३८ रिपोर्टों के आधर पर तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है । वे लिखते हैं कि 'न्यूक्लियर युद्ध होगा, तो अब से पाँच वर्षों के भीतर कभी भी हो सकता है, इसमें कोई भी पक्ष विजेता नहीं हो सकता । युद्ध अवश्यम्भावी है क्योंकि इस सीमा तक अणु आयुध एकत्र किए जा चुके हैं, युद्धोन्माद इस चरम तक पहुँच चुका है एवं पारस्परिक मतभेद इतने अधिक हैं कि कोई दैवी महाशक्ति ही इस स्थिति को अप्रत्याशित ढंग से रोक सकती है । युद्ध आरंभ होने पर अमेरिका पर प्रायः साढ़े छः हजार मेगाटन के बराबर शक्ति का आक्रमण होने की संभावना है जो १९४५ के हिरोशिमा के बम से प्रायः सवा पाँच लाख गुना अधिक शक्ति का होगा । सुरक्षा के प्रयत्नों के बावजूद अमेरिका, यूरोप, जापान, सोवियत रूस के लगभग अस्सी प्रतिशत व्यक्ति तुरन्त या कुछ ही दिनों में तीव्र वेदना भुगतते हुए अंतिम गति को प्राप्त हो जायेंगे ।

अमेरिका के भूतपूर्व रक्षा मंत्री जार्ज मार्शेल तथा हैरोल्ड ब्राउन भी पिछले दिनों यह कहते रहे हैं कि 'महायुद्ध का आरंभ तो आकाश से होगा किन्तु उसका अंत धरातल पर धूलि मात्र शेष रहने के रूप में होगा ।' साथ ही साथ रूसी पत्रिकाओं, वक्तव्यों प्रतिवेदनों में बराबर यह चेतावनी दी जा रही है कि यदि अमरीका ने उत्तेजक कार्यवाही आरंभ की तो रूस अपनी व अपने साथियों की सुरक्षा तथा शत्रु के व्यापक संहार का पूरा प्रयास करेगा ।

क्या यह सब भयावह स्वरूप वास्तव में घटित होगा, क्या मानवता के वर्तमान स्वरूप का अंत इतना ही दुःखद होगा ? इस सन्दर्भमें एक घटना ऐसी स्मरण की जा सकती है जो तीन वर्ष पूर्व एका एक ही सबके रोंगटे खड़े कर गयी थी ।

६ जून १९८० को एक कम्प्यूटर से मिली गलत जानकारी के आधार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर बचाव और प्रत्याक्रमण वाले सारे संयंत्र अमरीकी सुरक्षा सेना द्वारा सचेत कर दिए गए । सारे मिसाइल्स गंतव्य की ओर निशाने पर लगे थे । आणविक पनडुब्बियाँ अपनी कार्यवाही हेतु सचेत कर दी गईं । तीन स्थानों से प्राप्त सूचनाओं में थोड़ा अन्तर होने के कारण सुप्रीम कमाण्डरने तुरन्त 'काउण्टर चेकिंग' किया । इस सब काम में मात्र तीन मिनट लगे । प्रक्षेपास्त्र छोड़ने भर की देर थी । अंतिम समय में यह पता चलने पर कि यह संयंत्र की खराबी से प्राप्त गलत सूचना है, परमाणु हमले की सारी कार्यवाही एकदम रोक दी गयी, आदेश वापस ले लिए गए ।

आयुध विज्ञानी कहते हैं कि आज सारा यूरोप इंग्लैण्ड से लेकर पोलैण्डरूस की सीमा तक अति घातक दूर तक मार करने वाली मिसाइलों से भरा पड़ा है । एक संकेत भर मिलने की देर है । किसी भी समय फिर वैसी ही घटना की पुनरावृत्ति हो सकती है और सतत तनाव के वातावरण में काम करने वाले उच्चस्तरीय वैज्ञानिक यदि गलती से कोई ऐसी शुरुआत कर ही दें तो फिर परिणति की कल्पना ही भर की जा सकती है ।

आयुधों की रोकथाम तो दूर, बचाव हेतु भूमिगत शरणगाह बनाए जा रहे हैं । पिछले ही दिनों हालैण्ड में हुए ३० वें पुगवाश सम्मेलन में इस हास्यास्पद कदम को व्यर्थ बताते हुए भाग लेने वाले चिकित्सक—वैज्ञानिकों ने कहा था कि ये शरणगाहें उस विकिरण ऊर्जा से सुरक्षा कैसे दिला सकेंगी जो वातावरण के रोम-रोम में संव्याप्त होगा । सड़ती लाशों, खतरनाक जीवाणु—विषाणुओं के कारण महामारी फैलने से कौन रोक पायेगा ? भावी प्रलय की संभवतः पूर्व तैयारी के हेतु ही दोनोंही महाशक्तियों ने डाई-आक्सीन नापाम नामक रसायन आयुध तथा विषाणु-बम मिसाइलों का प्रयोग वियतनाम युद्ध से ही आरंभ कर दिया था । अभी भी एक भी घातक विषाणु कभी दुर्घटना वश बेकाबू हो जाय तो सारी मानवता को अपनी चपेट में ले सकता है ।

आज के वैज्ञानिक तो कह ही रहे हैं लेकिन कुछ द्रष्टा-मनीषियों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्य कथन भी ऐसा ही संकेत देते हैं कि एक विश्व युद्ध इस सदी की समाप्ति के पूर्व ही संभावित है। इनमें नोस्ट्राडेमस (सोलहवीं शती) तथा अमेरिकन महिला आयरीन ह्यूजेज का नाम प्रमुख लिया जाता है। दोनों ने ही तृतीय विश्वयुद्ध के जिन रोमांचकारी हृदय विदारक दृश्यों का वर्णन किया है वे वैज्ञानिक भविष्य कथनों से मेल खाते हैं। मिस्र के पिरामिडों पर लिखी पुस्तक' द ग्रेट पिरामिड्स, इट्स डिवाइन मेसेज' में भयानक आयुधों से बीसवीं सदी की समाप्ति के पूर्व ही घटित होने वाली एक विश्वव्यापी सहारलीला का वर्णन है। बाइबल के ओल्ड व न्यू टेस्टामेण्ट ग्रन्थों में भी आर्मेगेडान के रूप में १९८५ से ८७ के मध्य एक महा संहारक युद्ध का वर्णन है। महाभारत, हरिवंश पुराण, श्रीमद् भागवत में भी इसी अवधि में व्यापक परिवर्तन के संकेत है।

इन तेजी से बदलती परिस्थितियों के पीछे हर विचारशील को वस्तु स्थिति को समझना होगा। यह माहौल निश्चित ही जटिल है, बताता है कि दुनिया विनाश के कगार पर आ बैठी है। लेकिन ध्वंस ही स्रष्टा का लक्ष्य होता तो वह इस दुनिया को रचता ही क्यों। विनाश का यह वातावरण विकृत मनःस्थिति की अदृश्य जगत से प्रतिक्रियामात्र समझी जानी चाहिए। सोचा यह भी जाय कि संभव है सन्मति जागे और निराशा के वातावरण में भी आशा का सूरज चमक उठे। सन्मति ही प्रज्ञा है। प्रज्ञावतार को महाकाल या दैवी अनुशासन के रूप में जाना जा सकता है जो मनुष्य को सही मार्ग पर लाने के लिए प्रतारणा की भाषा में भी समझाता है—भयावह झाँकी भी दिखाता है। चिन्तन की यह दुष्टता मिटे, इसके लिए जरूरी है कि चारों तरफ समझदारी का वातावरण बने। दैवी चेतना इन दिनों इसी कार्य में सक्रिय देखी जा सकती है। महायुद्ध की प्रस्तुत विभीषिका टाली जा सकती है। विनाश को—प्रलय को रोका जा सकता है। पर यह तब ही सभव है जब मनुष्य परिस्थिति के अनुरूप अपना आचरण बदले। प्रज्ञावतार का विराट रूप इस सृष्टि को—मानवता को बचाएगा। इसमें किसी को किंचितमात्र भी सन्देह नहीं होना चाहिए।

क्र० १५१/प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४०पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org